लोकप्रियता के धनी : आचार्यश्री महाप्रज्ञ

–डॉ. सोहनराज तातेड़

लोकप्रियता उनको हस्तगत होती है जिनका जीवन लोक कल्याणकारी हो। जिनकी परमार्थ चेतना जागृत होती है वे लोकप्रिय हो जाते हैं। आचार्यश्री महाप्रज्ञ आधुनिक भारत के विवेकानन्द है। उनका पूरा जीवन पिछले 77 वर्षों से मानवता के कल्याण के लिए समर्पित है। ''तिन्नाणं–तारयाणं'' युक्ति के आधार पर वे स्व–पर कल्याण के पथ पर अग्रसर हैं। आचार्यश्री महाप्रज्ञ अध्यात्म के शिखर–पुरूष हैं

आचार्यश्री महाप्रज्ञ के अनुसार अध्यात्म के मूल आधार दो है–आत्मा और कर्म। यदि हम आत्मा और कर्म को हटा लें तो अध्यात्म आधार शून्य हो जायेगा। अध्यात्म की समूची कल्पना और व्यवस्था इस आधार पर है कि आत्मा को कर्म से मुक्त करना है। यदि आत्मा नहीं है तो किसे मुक्त किया जाय? यदि कर्म नहीं है तो किससे मुक्त किया जाय? ''आत्मा को कर्म से मुक्त करना है'' इस सीमा में समूचा अध्यात्म समा जाता है। वे स्वयं एक महान् अध्यात्मयोगी हैं। उन्होनें 77 वर्ष की साधुजीवन की साधना के दौरान कई आत्मानुभव किए। मानव जाति को आत्म जागरण के संदेश उनके प्रवचनों के माध्यम से प्रतिदिन संस्कार चैनल के माध्यम से लगातार प्रसारित हो रहे हैं। संस्कार चैनल के माध्यम से आचार्यश्री की अमृतवाणी पूरे देश एवं विश्व के कई देशों में पिछले लम्बे समय से प्रसारित की जा रही है। आपके अनुभवजन्य एवं प्रयोगात्मक प्रवचनो को सुनकर अनेक लोगों के जीवन का कायाकल्प हो गया। आपके प्रवचन मानव मात्र के लिए कल्याणकारी हैं। संस्कार चैनल द्वारा प्रसारित होने वाले प्रवचनो ने आचार्यश्री को महत्वपूर्ण लोकप्रियता दिलाई। जैन, जैनेतर, शिक्षित, बौद्विक, राजनीतिज्ञ, समाज–सुधारक, व्यवसायी, विद्यार्थी, महिलाएं आदि सभी वर्गों के लोग आचार्यश्री के प्रवचनों के माध्यम से अपनी आत्मा को जागृत कर रहे हैं।

आचार्य महाप्रज्ञ ने प्रेक्षाध्यान की उपसंपदा के पांच सूत्र–भावक्रिया, प्रतिक्रिया–विरति, मैत्री, मितभाषण एवं मिताहार मानवजाति को उपहार के रूप मे दिए जिनके माध्यम से अनेक लोगों के जीवन का कायाकल्प हो रहा है। आचार्यश्री महाप्रज्ञ उनका दावा है कि अगर व्यक्ति इनका निष्ठा से प्रयोग करता रहे तो असंवेदनशीलता, आंतकवाद, असहनशीलता, संग्रह की प्रवृति, मानव–मानव के बीच असमानता क्रूरता, नशा आदि आज के युग की भीषण समस्याओं का आसानी से समाधान हो सकता है। इन उपसंपदाओं के प्रयोग से श्रावक समाज साधार्मिक वात्सल्य स्वयं पा सकता है तथा औरो को भी प्रदान कर सकता है। प्रेक्षाध्यान के प्रयोगों ने महाप्रज्ञजी को अत्यन्त लोकप्रिय बना दिया क्योंकि ये प्रयोग मानव जाति की हर समस्या का समाधान देते हैं।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ के शब्दों में –''अध्यात्म और विज्ञान एक दूसरे के पूरक है। दोनों का सापेक्ष विकास जरूरी है।'' अध्यात्म और विज्ञान दोनों ही सत्य की खोज के मार्ग हैं।

वैज्ञानिक युग में वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपेक्षित है और शांतिपूर्ण जीवन के लिए आध्यात्मिकता भी अनिवार्य है। आध्यात्मिकता + वैज्ञानिकता = आध्यात्मिक वैज्ञानिक व्यक्तित्व। आज की अपेक्षा है कि व्यक्ति न कोरा वैज्ञानिक बने और न कोरा आध्यात्मिक बने अपितु आध्यात्मिक वैज्ञानिक बने। इन दोनों का योग ही मानव जीवन की हर समस्या का समाधान है और जीवन विज्ञान का प्रस्थान है। आचार्यश्री की आध्यात्मिक, वैज्ञानिक समन्यवयात्मक सोच ने उन्हें बहुत लोकप्रिय बना दिया। **आचार्यश्री में अध्यात्म को वैज्ञानिक धरातल पर प्रायोगिक बनाकर प्रशिक्षण के माध्यम से व्यक्ति के जीवन में उतारने की अनूठी कला है।** उनकी इस कला ने उनको पूरे विश्व में लोकप्रिय बना दिया। आचार्यश्री महाप्रज्ञ अतीन्द्रिय चेतना के धनी है। वे विज्ञान, मनोविज्ञान, पराविज्ञान, दर्शन, अर्थशास्त्र, भौतिक शास्त्र, शरीर विज्ञान, शरीर–क्रिया विज्ञान आदि के प्रखर ज्ञाता हैं। यह सब ज्ञान उनको अतीन्द्रिय चेतना से प्राप्त होता है। उनका तीसरा चक्षु खुला हुआ है। मानसिक चेतना के स्तर पर जीने वाले व्यक्ति को इतने गहरे ज्ञान की प्राप्ति नहीं हो सकती है। उनकी अतीन्द्रिय चेतना ने उनको बहुत लोकप्रिय बना दिया।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ एक कुशल मनोवैज्ञानिक है। व्यक्ति के चेहरे के हावभाव व उसके आभामण्डल को देखकर व्यक्ति की मानसिकता का पता लगा लेते हैं। उनके सम्पर्क में आने वाले व्यक्ति की वे इसी माध्यम से पहचान करते हैं। **उनका मानना है कि शारीरिक स्वास्थ्य का मूल्य दस प्रतिशत है, मानसिक स्वास्थ्य का मूल्य तीस प्रतिशत है और भावनात्मक स्वास्थ्य का मूल्य साठ प्रतिशत है।** अतः हम उल्टे क्रम से चले। पहले भावनात्मक स्वास्थ्य और फिर मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य की चिन्ता करें। इस क्रम से चलने पर चिन्ता स्वयं अचिन्ता बन जाएगी। शारीरिक, मानसिक व भावनात्मक स्वास्थ्य प्राप्ति के लिए महाप्रज्ञजी ने मानवता को 'प्रेक्षाध्यान' अवदान उपहार के रूप में दिया। इसके साथ–साथ उन्होंने व्यवस्थित जीवन जीने के लिए जीवनविज्ञान का आविष्कार किया। मनुष्य में नैतिकता आए इसके लिए अणुवव्र की आचार–संहिता लागू की। जौ व्यक्ति अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान व जीवन विज्ञान को अपने जीवन में आत्मसात करता है उसका स्वार्गीण विकास अवश्यंभावी है। अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान एवं जीवन विज्ञान जैसी महा विधाओं ने उनको मानवता का मसीहा मानते हुए अत्यन्त लोकप्रिय बना दिया।

महाप्रज्ञजी का चिन्तन है–रहो भीतर, जीओ बाहर। वे अन्तरचेतना से साक्षात्कार एवं उसकी अनुभूति पर विशेष बल देते हे। आचार्य श्री स्वयं अवचेतन मन व अचेतन मन से सम्पर्क करते है तथा लोगों को इनसे सम्पर्क कीं विधि बतलाते हैं। प्रेक्षाध्यान की गहन साधना से व्यक्ति अवचेतन मन से सम्पर्क कर सकता है। आचार्य महाप्रज्ञ की मान्यता है–''जब कायोत्सर्ग का अभ्यास पुष्ट हो जाता है, तब यह अनुभव होता है कि – शरीर अचेतन है, मैं शरीर नहीं हूँ। श्वास नहीं हूँ। इन्द्रिय अचेतन है, मैं इन्द्रिय नहीं हूँ। मन अवचेतन हैं, मैं मन नहीं हूँ। भाषा अचेतन है, मैं अचेतन नहीं हूँ। कायोत्सर्ग के अभ्यास से शरीर, श्वास एवं इन्द्रिय आदि आत्मा से पृथक् है, यह भेद–ज्ञान होने पर ही अस्तित्व का दर्शन अर्थात सम्यक् दर्शन होता है।'' सम्यक् दर्शन के फलित हैः– शान्ति, मुक्ति की चेतना, अनासक्ति, अनुकम्पा और सत्य के प्रति समर्पण। आचार्य महाप्रज्ञ के इस दार्शनिक चिन्तन ने उनको लोकप्रिय बनाया।

आचार्य महाप्रज्ञ का संकल्प है–''**मैं किसी व्यक्ति का अनिष्ठ चिन्तन नहीं करूंगा। मेरी यह निश्चित धारणा हो गई है। दूसरे का अनिष्ठ चाहने वाला उसका अनिष्ठ कर पाता है या नहीं कर पाता किन्तु अपना अनिष्ठ निश्चित ही कर लेता है।**'' इसी विचारधारा ने उनकों लोकप्रियता दिलाई। आचार्यश्री के साहित्य ने उनको अत्यन्त लोकप्रिय बना दिया। महाप्रज्ञजी का साहित्य वर्तमान युग की समस्याओं–तनाव, असंवेदनशीलता, आवेश, आवेग, अवसाद, आतंकवाद, हीनभावना, घृणा, धोखा–धड़ी, अप्रमाणिकता एवं अशांति का स्थाई समाधान देता है। कालजयी गुरूदेव आचार्यश्री महाप्रज्ञ की लोकप्रियता के प्रति श्रद्धा नमन् करते हुए आपके शतायु होने की मंगलकामना करता हूँ।

'वानप्रस्थाश्रम साधक'
संयोजक, पारमार्थिक शिक्षण संस्था,लाडनूं
सलाहकार, जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय, लाडनूं
सेवानिवृत अधीक्षण अभियंता,P.H.E.D.,राजस्थान सरकार